हस्ती मिटती नहीं उनकी

एक कारवां जो बढ़ता रहा...

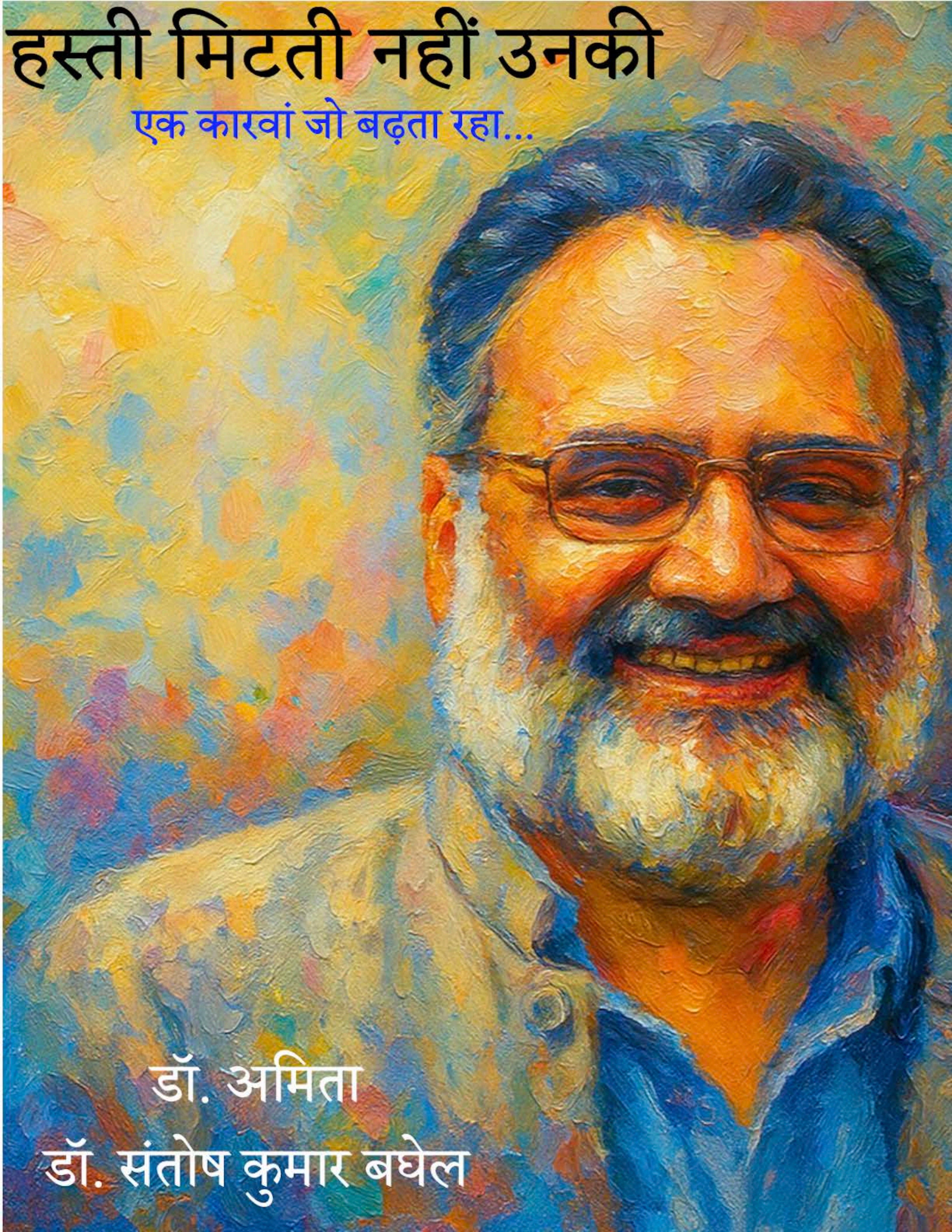

डॉ. अमिता
डॉ. संतोष कुमार बघेल

हस्ती मिटती नहीं उनकी एक कारवां जो बढ़ता रहा...

डॉ. अमिता

डॉ. संतोष कुमार बघेल

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जुलाई, 2025

© डॉ. अमिता, डॉ. संतोष कुमार बघेल

ISBN: 978-93-87621-92-3

अनुक्रम

संपादक की कलम से 6

स्वर्गीय पुष्पेंद्रपाल सिंह द्वारा रचित गाँधी पर केंद्रित लेख 16

कहाँ चले गए पुष्पेन्द्र पाल ? 26

डॉ. अजित पाठक

एक सच्चे पथ प्रदर्शक 32

डॉ. अंकिता मिश्रा

जीना इसी का नाम है 38

अखिलेश तिवारी

मेरे कर्म - पथ के शुभेक्षक 45

डॉ. अमरेन्द्र कुमार

बुलंद विचारो का करवां 55

कुंदन पाण्डेय

जिंदगी का अभिन्न हिस्सा था 70

गिरिजा शंकर

एक अच्छे संगठक थे 73

प्रो० डी०पी० सिंह

विदाई संभव नहीं 75

दीपक गौतम

इक दिन बिक जाएगा माटी के मोल 83

धर्मेंद्र नाथ प्रसाद

मेरे सर, मेरा गुरूर 87

धर्मेन्द्र सिंह भदौरिया

जिंदगी की लौ ऊंची कर लो 90

पीयूष बबेले

ना जाने कितनो को पीपीफाई कर गये 94

पशुपति शर्मा

ऐसे थे उनके चाहने वाले 101

मिथिलेश कुमार

भीड़ में अकेले चलता रहा 106

मनोज कुमार

जिंदगी का कैनवास फीका पड़ गया 110

योगिता सिंह

प्रतिभा का भंडार पर व्यवस्था का शिकार 114

रघु ठाकुर

बाकी था सर्वश्रेष्ठ देना 122

राजेश बादल

गुरु होने के मायने 127

रितेश पुरोहित

चलते-फिरते संस्थान 134

डॉ. रामअवतार यादव

कभी नहीं भर पाएगा शून्य 140

राहुल देव

माध्यम के प्राण पखेरू 146

विजयमनोहर तिवारी

शख़्सियत एक किरदार अनेक 151

प्रो० (डॉ०) वीरेन्द्र कुमार व्यास

संवेदनशील पर्यावरणविद् 154

संजय सिंह

आसान नहीं है पुष्पेन्द्र पाल सिंह होना…!! 157

संजीव शर्मा

ज़िंदगी जीने के रंग सिखा गए 161

सत्येन्द्र खरे

गुरु का अवसान नहीं होता 165

सतीश एलिया

ऐसे भी होते है इंसान 169

सुमिता जायसवाल

मुश्किल है ऐसा व्यक्तित्व 174

हुसैन ताबिश

असमय बुझा चिराग 177

प्रो० डॉ० श्रीकांत सिंह

कहां तुम चले गये... 183

डॉ. राजीव सिंह

स्वर्गीय पी.पी. सिंह जी द्वारा लिखा लेख 187

संपादक की कलम से

"लगा न सका कोई उसके कद का अंदाजा । वह आसमां था मगर सर झुकाए चलता रहा ।"

प्रो. पुष्पेंद्र पाल सिंह जो शिक्षा जगत में पीपी सर के नाम से भी प्रसिद्ध थे, एक बेमिसाल शख़्सियत थे। उनके व्यक्तित्व पर यह पंक्ति बिल्कुल सटीक बैठती है। अपने नाम के अनुरूप सर का व्यक्तित्व जीवन पर्यंत महकता रहा। जो भी उनके संपर्क में आता, उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता। यही वजह है कि वे जहां भी रहें, उन्होंने अपनी एक अमिट छाप छोड़ी। वे बहुत कम शब्दों में बहुत कुछ कह जाते। उनके सामने जो भी गया, उसे कभी छोटा महसूस नहीं कराया और न ही कभी निराश किया। वे हर किसी के समस्या का समाधान ढूंढ ही लेते थे। जो लोग छोटे-मोटे कामों में व्यस्तता का हवाला देते हैं, उन्हें सर के व्यक्तित्व पर जरूर गौर फरमाना चाहिए, जिनकी ज़ुबान से कभी व्यस्तता जैसे शब्द सुनने को नहीं मिला।

7 मार्च 2023 की सुबह, लगभग 9 बजे मेरे एक साथी का फ़ोन आया। मैंने जैसे ही फ़ोन उठाया, उसने कहा पुष्पेंद्र पाल सर के बारे में कुछ पता चला? मैंने पूछा नहीं, क्यों? क्या हो गया? थोड़ी देर बाद उसने कहा, शायद सर अब इस दुनिया में नहीं रहें। यह खबर सुनते ही मैंने कहा आपका दिमाग खराब है क्या? ऐसा कैसे हो सकता है? उसने कहा कि आप एक बार कन्फर्म करें कि यह खबर सही है या नहीं? कुछ देर तक तो मैं समझ ही नहीं